एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन क्षेत्र का योगदान एवं चारे की उपलब्धता का परिदृश्य

(*सतपाल एवं बिशन सिंह)

चौ0 चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्विद्यालय, हिसार

*संवादी लेखक का ईमेल पता: satpal_fpj@hau.ac.in

भारत जैसे कृषि प्रधान देष की अर्थव्यवस्था में पषुधन एवं पषुपालकों का महत्तवपूर्ण स्थान है। पशुधन क्षेत्र आय, रोजगार और विदेशी मुद्रा विनिमय आय के मामले में भारत की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है। देष के ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे 60 प्रतिषत् ग्रामीणों के लिए पषुपालन आज भी उनकी आजीविका का आधार है। 20वीं पषुगणना के अनुसार हमारे देष में 53.57 करोड़ पशुधन है। पशुधन क्षेत्र में, मवेशी और भैंस भारत की अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं क्योंकि इसमें विश्व मवेशियों की आबादी का लगभग 13 प्रतिशत और विश्व भैंस आबादी का 56 प्रतिशत है। भारत दुनिया में भैंस की आबादी में पहले स्थान, मवेशियों और बकरियों की आबादी में दूसरे स्थान व भेड़ की आबादी में तीसरे स्थान पर है। यह पशुधन ग्रामीण कृषक परिवारों द्वारा छोटी भूमि पर (एक से दो एकड़) व भूमिहीन मजदूरों द्वारा दूध, ड्राफ्ट व मांस उत्पादन के लिए रखा जाता है। विश्व मांस उत्पादन में भारत की रैंक पांचवीं रैंक है। भारत 6.3 मिलियन टन मांस उत्पादन करके कुल विश्व मांस उत्पादन में 3 प्रतिशत का योगदान देता है। विश्व में मांस उत्पादन में भारत पांचवें स्थान पर है। पशुधन की बड़ी आबादी के कारण, भारत में मांस उद्योग के लिए एक बड़ी क्षमता है, लेकिन नकारात्मक धारणाओं के कारण, यह इतना विकसित नहीं हो सका। भारत सबसे बड़ा भैंस का मांस निर्यात करने वाला देश है, हालांकि यह भेड़ के मांस का भी कम मात्रा में निर्यात करता है। वर्ष 1969 में भारत से मांस का निर्यात शुरू हुआ। पिछले 50 वर्षों के दौरान, भारत से निर्यात किए जाने वाले मांस की मात्रा बढ़ रही है।

भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) पशुधन निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, इंडोनेशिया सहित दुनिया भर के 70 से अधिक देशों में भारतीय भैंस के मांस का सफलतापूर्वक निर्यात कर रहा है। त्वरित अनुमानों के अनुसार अप्रैल–जून, 2021–22, पशुधन उत्पादों का निर्यात 3668 करोड़ रुपये से बढ़कर 7543 करोड़ रुपये हो गया। भारत से भैंस के मांस के निर्यात कारोबार पर कोविड–19 का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा है। यह ट्रैक पर है और आपूर्ति श्रृंखला में बिना किसी बाधा के सुचारू रूप से चल रहा है। महामारी के प्रभाव के बावजूद, भारत वर्ष अप्रैल 2020–मार्च 2021 में 3.17 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य का निर्यात करने में सक्षम रहा है, जो पिछले वर्ष के निर्यात के स्तर के बराबर है। उच्च मांग के कारण, भारतीय भैंस के मांस का निर्यात हांगकांग, वियतनाम, मलेशिया, मिस्र, इंडोनेशिया, इराक, सऊदी अरब, फिलीपींस, संयुक्त अरब अमीरात के देशों में किया जाता है।

पशुधन लोगों को भोजन और गैर–खाद्य पदार्थ प्रदान करता है।

1. **भोजनः** पशुधन मानव उपभोग के लिए दूध, मांस और अंडे जैसे खाद्य पदार्थ प्रदान करता है। भारत दुनिया में नंबर एक दूध उत्पादक है। यह एक वर्ष में दूध की लगभग 137.7 मिलियन लीटर मात्रा का उत्पादन कर रहा है। । इसी तरह यह एक साल में लगभग 74.75 अरब अंडे, 8.89 मिलियन टन मांस का उत्पादन कर रहा है।

2. **फाइबर और खाल:** पशुधन ऊन, बाल, खाल व छर्रों के उत्पादन में भी योगदान देता है। इसके अलावा चमड़ा सबसे महत्वपूर्ण उत्पाद है जिसकी निर्यात क्षमता बहुत अधिक है। भारत प्रतिवर्ष लगभग 47.9 मिलियन किलोग्राम ऊन का उत्पादन कर रहा है।
3. **ड्राफ्ट:** बैल भारतीय कृषि की रीढ़ की हड्डी हैं। भारतीय कृषि कार्यों में यांत्रिक शक्ति के उपयोग में बहुत अधिक प्रगति के बावजूद, भारतीय किसान विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी विभिन्न कृषि कार्यों के लिए बैलगाड़ियों पर निर्भर हैं। बैलगाड़ियाँ ईंधन पर बहुत बचत कर रही हैं जो ट्रैक्टर, यांत्रिक हार्वेस्टर जैसे कंबाइन पावर का उपयोग करने के लिए एक आवश्यक इनपुट है। ऊंट, घोड़े, गधे, टट्टू, खच्चर आदि जानवरों को देश के विभिन्न हिस्सों में माल परिवहन के लिए बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जा रहा है। बैल के अलावा। पहाड़ी इलाकों में खच्चरों और टट्टू जैसे सामान परिवहन के लिए एकमात्र विकल्प के रूप में काम करते हैं। इसी तरह, सेना को ऊंचाई वाले क्षेत्रों में विभिन्न वस्तुओं के परिवहन के लिए इन जानवरों पर निर्भर रहना पड़ता है।
4. **गोबर और अन्य पशु अपशिष्ट पदार्थ:** गोबर और अन्य पशु अपशिष्ट बहुत अच्छे खेत यार्ड खाद के रूप में काम करते हैं और इसका मूल्य कई करोड़ रुपये है। इसके अलावा इसका उपयोग ईंधन (बायो गैस, गोबर केक), और निर्माण के लिए गरीब आदमी के सीमेंट (गोबर) के रूप में भी किया जाता है।
5. **भंडारण:** पशुधन को ''चलती–फिरती बैंक'' माना जाता है क्योंकि आपात स्थिति के दौरान उन्हें दूर करने की उनकी क्षमता के कारण। वे पूंजी के रूप में सेवा करते हैं और भूमिहीन खेतिहर मजदूरों के मामलों में कई बार यह एकमात्र पूंजी संसाधन होता है जो उनके पास होता है। पशुधन एक संपत्ति के रूप में काम करता है और आपात स्थिति के मामले में वे स्थानीय स्रोतों से ऋण लेने की गारंटी के रूप में सेवा करते हैं जैसे कि गांवों में धन उधारदाता।
6. **खरपतवार नियंत्रण:** पशुधन का उपयोग बुश व पौधों के जैविक नियंत्रण के रूप में भी किया जाता है।
7. **सांस्कृतिक:** पशुधन मालिकों को सुरक्षा प्रदान करते हैं और उनके आत्मसम्मान को भी बढ़ाते हैं, विशेष रूप से तब जब वे बेशकीमती जानवर जैसे कि पेड बैल, कुत्ते व उच्च दूध उपज देने वाली गायों व भैंसों आदि के मालिक होते हैं।
8. **खेल एवं मनोरंजन:** प्रतियोगिता और खेल के लिए लोग जानवरों जैसे बैल आदि का भी उपयोग करते हैं। इन जानवरों की प्रतियोगिताओं पर प्रतिबंध के बावजूद त्यौहारों के मौसम के दौरान मुर्गा घाट, राम घाट और बैल घाट (जली कट्टू) काफी आम हैं।
9. **साथी जानवर:** कुत्तों को उनके विश्वासयोग्य होने के लिए जाना जाता है और उन्हें पुराने समय से ही साथी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। जब एकल परिवार संख्या में बढ़ रहे हैं व बूढ़े माता–पिता को एकान्त जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है, बिल्लियाँ व कुत्तें उनको आवश्यक कंपनी प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें एक आरामदायक जीवन जीने में मदद मिलती है।

किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में किसान मिश्रित कृषि प्रणाली को बनाए रखते हैं यानी फसल एवं पशुधन का एक संयोजन जहां एक उद्यम का उत्पादन दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाता है, जिससे संसाधन संपन्नता का एहसास होता है। पशुपालक विभिन्न तरीकों से किसानों की सेवा करते हैं।

1. **आय:** भारत में पशुधन कई परिवारों के लिए सहायक आय का एक स्रोत है विशेष रूप से संसाधन गरीब जो जानवरों के कुछ प्रमुखों को बनाए रखते हैं। यदि दूध में गाय और भैंस दूध की बिक्री के माध्यम से पशुपालकों को नियमित आय प्रदान करेंगे। भेड़ और बकरी जैसे जानवर विवाह के लिए परिश्रम, बीमार व्यक्तियों का इलाज, बच्चों की शिक्षा, घरों की मरम्मत आदि जैसे आपात स्थितियों के दौरान आय के स्रोत के रूप में काम करते हैं। पशु भी चलती–फिरती बैंकों और संपत्ति के रूप में काम करते हैं जो मालिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।
2. **रोजगार:** भारत में बड़ी संख्या में लोग कम साक्षर और अकुशल हैं और अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। लेकिन प्रकृति में मौसमी होने की वजह से साल में अधिकतम 180 दिन ही रोजगार मिल पाता है। कम और कम भूमि वाले लोग दुबले कृषि के मौसम में अपने श्रम का उपयोग करने के लिए पशुधन पर निर्भर करते हैं।
3. **भोजन:** पशुओं के दूध, मांस और अंडे जैसे पशुधन उत्पाद पशु मालिकों के सदस्यों के लिए पशु प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

4. **सामाजिक सुरक्षाः** पशु समाज में अपनी स्थिति के अनुसार मालिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। परिवार विशेष रूप से भूमिहीन जो अपने पशुओं को उन लोगों की तुलना में बेहतर रखा जाता है जो नहीं करते हैं। विवाह के दौरान जानवरों का उपहार देश के विभिन्न हिस्सों में एक बहुत ही सामान्य बात है। जानवरों को पालना भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा है। जानवरों का उपयोग विभिन्न सामाजिक धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता है। धार्मिक कार्यों के दौरान बैल और गायों की पूजा की जाती है।
5. **ड्राफ्टः** बैल भारतीय कृषि की रीढ़ की हड्डी हैं। किसान विशेष रूप से सीमांत और छोटे इनपुट और आउटपुट दोनों की जुताई, कार्टिंग व परिवहन के लिए बैल पर निर्भर करते हैं।
6. **गोबरः** ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है जिसमें ईंधन (गोबर केक), उर्वरक (खेत की यार्ड खाद), और पलस्तर सामग्री (गरीब आदमी का सीमेंट) शामिल हैं।

भारतीय पशुधन एवं चारे की उपलब्धता

भारतीय पशुधन क्षेत्र से देश के सकल घरेलू उत्पाद में मूल्य उत्पादन योगदान कृषि और संबद्ध क्षेत्र से कुल योगदान का लगभग 40.6 था। भारत के सामाजिक आर्थिक जीवन में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह दूध, मांस और अंडे जैसे उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों का एक समृद्ध स्रोत है और लाखों ग्रामीण किसानों, खासकर महिलाओं के लिए आय और रोजगार का एक स्रोत है। बड़ी मानव आबादी और लगभग 250 मिलियन आर्थिक रूप से मजबूत संभावित उपभोक्ताओं के साथ, इन खाद्य उत्पादों की घरेलू मांग तेजी से बढ़ रही है, मांग अक्सर आपूर्ति से अधिक होती है। पिछली पशुधन की गणना (2019) के अनुसार, भारत में 536 मिलियन पशुधन एवं 400 मिलियन पालतू मुर्गी पक्षी थे। फसल की खेती के लिए एक वैकल्पिक निर्वाह तंत्र के रूप में इसकी क्षमता को देखते हुए, इस क्षेत्र को न केवल ग्रामीण विकास के लिए प्राथमिकता के साथ संबोधित किया गया है, बल्कि इस संभावना के कारण कि यह खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में अपने योगदान के माध्यम से आर्थिक विकास में योगदान देता है।

पशुओं की उत्पादकत्ता के लिए पौष्टिक चारे की आपूर्ति

भारत की पशुधन संख्या अत्यंत विशाल है। देश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल विश्व के संपूर्ण भू–भाग का मात्र 2 प्रतिशत है जबकि यहां पशुधन संख्या का 15 प्रतिशत एवं मानव संख्या का 18 प्रतिशत है। देश में पशुओं की संख्या (20 वीं पशुगणना, वर्ष 2019) 536 मिलियन है। प्रारंभ से ही पशुधन का हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश की कुल जोत के लगभग 4 प्रतिशत क्षेत्रफल में ही चारा उगाया जाता है जबकि वर्तमान में 12 से 16 प्रतिशत क्षेत्रफल में चारा उगाने की आवश्यकता है। इसलिए हमारे देश में 11 प्रतिशत हरे व 23 प्रतिशत सूखे चारे की कमी आकी गई है। अनेक कारणों से हमारे पशुओं की उत्पादकत्ता कम रही है जिसमें से एक मुख्य कारण उन्हें आवश्यक व पौष्टिक आहार का ना मिलना रहा है यदि हम अपने चारे की आवश्यकता को पूरा करना चाहते हैं तो हमें उपलब्ध सीमित संसाधनों में ही पशुओं को भरपेट गुणवत्तापूर्ण पौष्टिक चारा उपलब्ध करवाने में आने वाली कठिनाईयों का हल खोजना होगा।

चारा उत्पादन को बढ़ाने हेतु उपाय :

- अधिक पैदावार देने वाली व उच्च गुणवत्ता वाली किस्मों के बीज का प्रयोग करें।
- अनुपयोगी भूमि में चारा फसलों की खेती करें।
- खेतों की मेड़ों पर चारा घासों (संकर हाथी घास) की रोपाई करें जिससे हरे चारे की निरंतर उपलब्धता बनी रहे।
- चारे का भंडारण एंव संरक्षण (हे एंव साइलेज के रुप में) कर उसे सुरक्षित करें।
- चारे के गैर परम्परागत स्त्रोतों से इसकी नियमित उपलब्धता बनाए रखें।